2020-

ISSN-2320-4439
RNI No.MAHAUL03008/13/2012-TC

# POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

Special Issue II Aug.2020

Paper in Journal

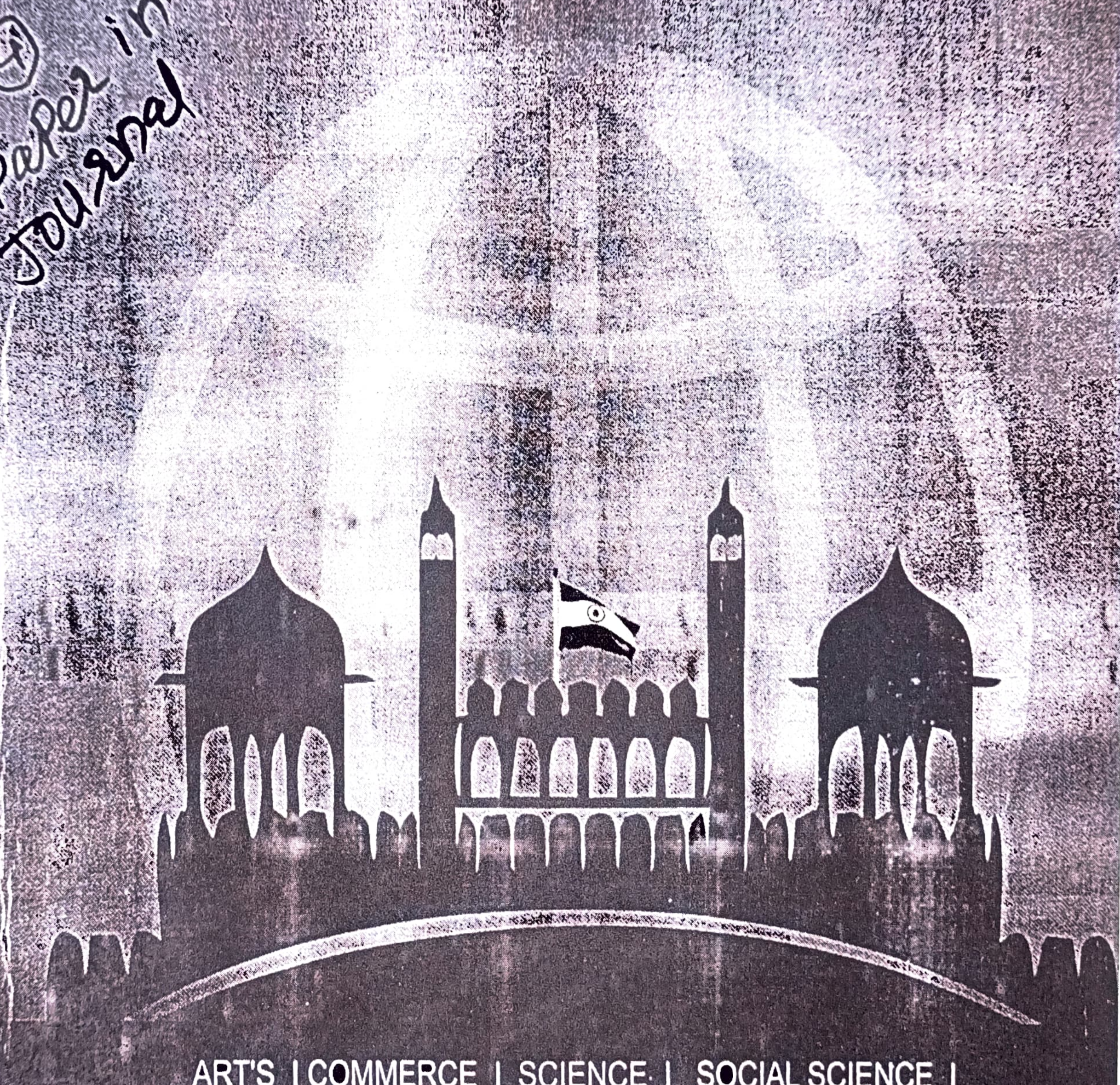

ART'S | COMMERCE | SCIENCE | SOCIAL SCIENCE |
EDUCATION | MANAGEMENT | MEDICAL | ENGINEERING & IT |
LAW | PHARMACY | PHYSICAL EDUCATION | AGRICULTURE |
JOURNALISM | MUSIC | LIBRARY SCIENCE |

Editor
**Dr. Sadashiv H. Sarkate**
E-mail : powerofknowledge3@gmail.com
www.powerofknowledge.co.in

| | | | |
|---|---|---|---|
| 21 | ह.मो.मराठे यांच्या कथा साहित्यातील स्त्री जीवन | उमेश सुखरामजी चव्हाण | 120-125 |
| 22 | कोकणातील लेखिका आणि प्रादेशिकता | मार्गदर्शक - प्रा.डॉ.चंद्रकांत वाघमारे<br>अभ्यासक - प्रा.शंकर मारूती जाधव | 126-130 |
| 23 | बंजारा बोलीतील अर्थविस्तार व अर्थसंकोच | डॉ. व्ही. बी. राठोड | 131-138 |
| 24 | काय डेंजर वारा सुटलाय !' या नाटकाचे परीक्षण | प्रा.दिलीप महादू कोने | 139-142 |
| 25 | यशवंत मनोहर यांच्या काव्यातील जीवनदृष्टी आणि मानवतावाद | प्रा.डॉ.शिवसांब कापसे | 143-145 |
| 26 | भटक्या विमुक्तांच्या अस्तित्वाचा संघर्ष - माकडीचा माळ | प्रा.डॉ.सोपान मानिकराव सुरवसे | 146-149 |
| 27 | दुर्लक्षित वेताळवाडी किल्ल्याचा इतिहास | प्रा.डॉ.संजय बाबुराव वाकळे | 150-152 |
| 28 | भारत के सांस्कृतिक परिवर्तन में संचार की भूमिका - एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। | डॉ.दत्ता माधवराव तपलवाड | 153-161 |
| 29 | सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में निरक्षरों के शोषण की समस्या | डॉ. कृष्णा गायकवाड | 162-167 |
| 30 | कोवीड - १९ या रोगाचा महाराष्ट्रातील कृषी पुरक उद्योगावर झालेला परिणाम | प्रा.डॉ.जाधव व्ही.डी. | 168-172 |
| 31 | दलित कविता प्रयोग की नई पहचान<br>दलित कविता प्रयोग की नई पहचान | डॉ.अरविन्द कुमार | 173-179 |
| 32 | मन्नू भंडारी की कहानियों मे नारी - चेतना | डॉ.शंकर गंगाधर शिवशेट्टे | 180-185 |
| 33 | असफल दाम्पत्य जीवन की करूण कहानी कमलेश्वर "काली आँधी" उपन्यास के संदर्भ में | प्रा.डॉ. शिवाजी सांगोळे | 186-191 |
| 34 | लक्ष्मण गायकवाड यांचे कांदबरी लेखन : एक आकलन | डॉ.सरला गोरे/सावकारे | 192-197 |
| 35 | मराठी साहित्य आणि जीवनमूल्य : एक शोध | प्रा. डॉ. नामदेव सोडगीर | 198-202 |
| 36 | पोळणाऱ्या सावल्या : एक दृष्टिक्षेप | डॉ. लहूकुमार खंडाळे | 203-205 |
| 37 | दलित आत्मकथचे: एक सामाजिक वास्तव दर्शन | डॉ. जनार्दन दामू परकाळे | 206-215 |
| 38 | वारकरी संतांच्या ओवी-अभंगाचे सौंदर्यमूल्य | प्रा.डॉ.वसंत रघुनाथ शेंडगे | 216-221 |
| 39 | महानुभाव साती ग्रंथामध्ये सह्याद्रीवर्णन काव्य ग्रंथाचे वेगळेपण | डॉ. अण्णा वैद्य | 222-227 |
| 40 | संत जनाबाईची अभंगवाणी : भाषिक सौंदर्य | प्रा.डॉ.वसंत रघुनाथ शेंडगे | 228-237 |
| 41 | "लोकशाहिर अण्णा भाऊ साठेंच्या कथांमधून अविष्कृत होणारे मानवी जीवन." | श्री. कांबळे शितल शशिकांत | 238-243 |
| 42 | संत तुकारामांच्या अभंगातील समाजदर्शन | प्रा. बाजीराव कृष्णाजी पाटील | 244-247 |
| 43 | संतकवयित्री मुक्ताबाईच्या अभंगवाणीचे वाङ्मयीन सौंदर्य | प्रा.डॉ.वसंत रघुनाथ शेंडगे | 248-257 |

# भारत के सांस्कृतिक परिवर्तन में संचार की भूमिका - एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।

डॉ.दत्ता माधवराव तंगलवाड
सहायोगी प्राध्यापक तथा समाजशास्त्र विभाग प्रमुख
महिला महाविद्यालय, गेवराई ता.गेवराई जि.बीड-४३११४३

## प्रास्ताविक

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती रही हैं, किन्तु भारत की संस्कृति आदि काल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है। इसकी उदारता तथा समन्यवादी गुणों ने अन्य संस्कृतियों को समाहित तो किया है, किन्तु अपने अस्तित्व के मूल को सुरक्षित रखा है। तभी तो पाश्चात्य विद्वान् अपने देश की संस्कृति को समझने हेतु भारतीय संस्कृति को पहले समझने का परामर्श देते हैं। मानवी ही संस्कृति का निर्माता माना जाता है। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और उन्नत करता रहता है। ऐसी प्रत्येक जीवन-पद्धति, रीति-रिवाज रहन-सहन आचार-विचार नवीन अनुसन्धान और आविष्कार, जिससे मनुष्य पशुओं और जंगलियों के [illegible] से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है। संस्कृति से मानसिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है। मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता। मन और आत्मा सन्तुष्ट करने के लिए मनुष्य अपना जो विकास और उन्नति करता है, उसे संस्कृति कहते हैं। मनुष्य की जिज्ञासा का परिणाम धर्म और दर्शन होते हैं। सौन्दर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र और वास्तु आदि अनेक कलाओं को उन्नत करता है। इस प्रकार मानसिक क्षेत्र में उन्नति की सूचक उसकी प्रत्येक सम्यक् कृति संस्कृति का अंग बनती है।लेस्ली व्हाईट "मानव की उन 5 विशेषताओं का उल्लेख किया जाता है, जिसके कारण मानव द्वारा संस्कृति का निर्माण संभग हुआ है 1) सिधे खडे हो सकती क्षमता 2 )स्वतंत्रता पूर्व घुमाये जा सकने वाला हात 3) तीक्ष्ण एंव केंद्रित की जा सकने वाली दृष्टी। 4) मेधावी, मस्तिष्क 5) प्रतीकों के निर्माण की क्षमता "[1]

संस्कृति जीवन की विधि है। जो भोजन हम खाते हैं, जो कपड़े पहनते हैं, जो भाषा बोलते हैं और जिस भगवान की पूजा करते हैं, इनसे संस्कृति भी सूचित होती है। सरल शब्दों मे हम कह सकते हैं कि संस्कृति उस विधि का प्रतीक है जिसके आधार पर हम सोचते हैं; और कार्य करते हैं। इसमें वे अमूर्त/अभौतिक भाव और विचार भी सम्मिलित हैं जो हमने एक परिवार और समाज के सदस्य होने के नाते

उत्तराधिकार में प्राप्त करते हैं। एक सामाज वर्ग के सदस्य के रूप में मानवों की सभी उपलब्धियाँ उसकी संस्कृति से प्रेरित कही जा सकती हैं। कला, संगीत, साहित्य, वास्तुविज्ञान, शिल्पकला, दर्शन, धर्म और विज्ञान सभी संस्कृति के प्रकट पक्ष हैं। तथापि संस्कृति में रीतिरिवाज, परम्पराएँ, पर्व, जीने के तरीके, और जीवन के विभिन्न पक्षों पर व्यक्ति विशेष का अपना दृष्टिकोण भी सम्मिलित हैं। संस्कृति शब्द का प्रयोग अनेक अर्थ मे किया गया है। संस्कृति से तात्पर्य है मानव द्वारा निर्मित शर्तीत व भौतिक अभौतिक वस्तूंचे होता है। संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा से लिया गया है संस्कृत और संस्कृति दो शब्द संस्कार से जुडे हुए है, संस्कार का अर्थ हैं कुछ कृती या अनुष्ठान की पूर्ती करना ।

**अनुसंधान विधान :-**

भारत के सांस्कृतिक परिवर्तन में संचार की भूमिका – **एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।**

इस विषय को लेकर प्रस्तुत शोध कार्य में संचार साधनो का भारतीय समाज के संस्कृतिक परीवर्तन मे क्या योगदान है ? ये खोजने का प्रयास किया है।

**संस्कृति की संकल्पना:-**

संस्कृति की संकल्पना स्पष्ट करते हुए भिन्न- भिन्न विचारको ने अपने विचार व्यक्त किया है इस प्रकार है ।

1) हरस्कोवीट्स के अनुसार की, - "पर्यावरण का मानवनिर्मित भाग संस्कृति माना जाता है।"

2) हॉबल के अनुसार - "संस्कृतिशी के हुए व्यवहार प्रतिमा नोका स्कूल योग है जो किसी समाज के सदस्य की विशेषता है जो की प्राणी शास्त्रीय विरासत का परिणाम नही है।"

3) टायलर के अनुसार –" संस्कृति व संपूर्ण जटिलता है जिस्मे ज्ञान विश्वास कला नैतिकता कानून प्रथा तथा सभी क्षमता yo-yo गुण सन्मिलित है जिने मानव समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करना है।"

4) मोलीनोवस्की के अनुसार– " संस्कृति जीवन व्यतीत करणे की एक संपूर्ण विधी आहे जो की व्यक्ती की शारीरिक, मानसिक आणि आवश्यकता की पूर्ति करती है और प्रकृती के संवध दोनशे मुक्त करती है।'

5) डॉ दुबे के अनुसार – "सिखे हुए व्यवहार प्रकारों की उस समग्रता को जो किसी समूह को वैशिष्ट्य प्रदान करते है, संस्कृति की संज्ञा दी जा सकती है। अन्य शब्द में किसी समूह के ऐतिहासिक विकास में जीवन-यापण के जो विशिष्ट स्वरूप विकसित हो सकते है ही समूह की संस्कृति है।"

6) रोबर्ट बीरस्टीड के अनुसार – "संस्कृति वह संपूर्ण जटिलता है जिसमें वे सभी वस्तूएं सम्मिलित है, जिन पर हम विचार करते है, कार्य करते है, और समाज के सदस्य होने के नाते अपने पास रखते है। अन्तर्गत हम जीवन जीविका कार्य करणे विचार करना के उन सभी तत्व को संबोधित करते है जो की एक पिढी से दूसरे पिढी को हस्तांतरित होते है और जो समाज के सुकृत अंग बन चुकी है।"

7) पारसन्स ने अपने The Social Systemइस ग्रंथ में कहा है की, "संस्कृति को एक ऐसे पर्यावरण के रूप में परिभाषित किया है, जो मानव क्रियाओं के निर्माण से है उसका तात्पर्य है, कि संस्कृति मानव के व्यक्तित्व क्रियाओं का निर्धारण करती है।"

8) फेयर चाइल्ड के अनुसार – "प्रतीकों द्वारा सामाजिक रूप प्राप्त और संचारित सभी व्यवहार प्रतिमानों के लिए है सामूहिक नाम संस्कृति है।"

संचार कि परिभाषाएं-

a. प्रसिद्ध संचारवेत्ता डेनिस मैक्वेल के अनुसार, " एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेशों का आदान प्रदान है।

b. डॉ. मरी के मत में, "संचार सामाजिक उपकरण का सामंजस्य है।"

c. लीगैन्स क़ी शब्दों में, " निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया निरंतर अन्तक्रिया से चलती रहती है, और इसमें अनुभवों की साझेदारी होती है।"

संस्कृति हमारे जीने और सोचने की विधि में हमारी अन्तःस्थ प्रकृति की अभिव्यक्त है। यह हमारे साहित्य में, धार्मिक कार्यों में, मनोरंजन और आनन्द प्राप्त करने के तरीकों में भी देखी जा सकती हैं। संस्कृति के दो भिन्न उप-विभाग कहे जा सकते हैं - भौतिक और अभौतिक। भौतिक संस्कृति उन विषयों से जुड़ी हैं जो हमारी सभ्यता कहते हैं, और हमारे जीवन के भौतिक पक्षों से सम्बद्ध होते हैं, जैसे हमारी वेशभूषा, भोजन, घरेलू सामान आदि। अभौतिक संस्कृति का सम्बध विचारों, आदर्शों, भावनाओं और विश्वासों से है। भारतीय समाज की व अभौतिक संस्कृती पर चित्रपट,

दूरचित्रवाणी जैसे विविध चैनल, वर्तमानपत्र का बहुत बडा हो रहा है। उसके साथ व्हाट्सअप, इंस्टाग्राम, फेसबूक, ट्विटर, तांत्रिक सुविधा भारत के जनमानस के मन पर वहु बडी पकडती है, इसीलिए हे संपूर्ण भारतीय मानव समाज इससे प्रभावित हो रहा है। इसके बदलत भारतीय संस्कृती विकृती की और बडती जा रही है। दिन ब दिन मनुष्य प्राणी बनने की और कदम उठा रहा है। माया, प्रेम, मोहब्बत सिर्फ दिखाने के लिए ही बाकी है इसके अलावा दुसरा कुछ नही है ऐसा मेरा माना है। संस्कृति एक समाज से दूसरे समाज तथा एक देश से दूसरे देश में बदलती रहती है। इसका विकास एक सामाजिक अथवा राष्ट्रीय संदर्भ में होने वाली ऐतिहासिक एवं ज्ञान-सम्बंधी प्रक्रिया व प्रगति पर आधारित होता है। उदाहरण के लिए, हमारे अभिवादन की विधियों में, हमारे वस्त्रों में, खाने की आदतों में, पारिवारिक सम्बन्धों में, सामाजिक और धार्मिक रीतिरिवाजों और मान्यताओं में परिचम से भिन्नता है। सच कहें तो, किसी भी देश के लोग अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराओं के द्वारा ही पहचाने जाते हैं। भारतीय समाज वाचिक संचार का समाज रहा है। मुद्रित और दृश्य-श्रव्य माध्यमों के आने पर भी वाचिक परंपरा समाप्त नहीं हुई। पारंपरिक और आधुनिक संचार माध्यमों ने जनता में देश की कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत के प्रति समझ पैदा की है। संस्कृति की परिभाषा और सजाने के बाद सामाजिक परिवर्तन क्या है? सामाजिक परिवर्तन की संकल्पना क्या है? इस्की भी जानकारी लेना जरुरी है। इसलिये सामाजिक परिवर्तन की संकल्पना निम्नलिखित रूप असे स्पष्ट की गई है। परीवर्तन प्रकृती का नियम है जो आज है, व भावी कल से होगा सामाजिक संरचना मे सदैव परिवर्तन होत है। 50 साल उपरांत सरकार समाज मे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन कर देंगे। भिन्न सामाजिक संस्था मी परिवर्तन हो राहा है चाहे व्यक्ती स्थायित्व के लिए प्रयत्न करते रहे, समाज मे स्थिरता का भरम पूर्ण करते रहे, निश्चितता की खोज अबाधित बने रहे, पर नही किया जा सकता कि समाज सदैव परिवर्तनशील परिघटना है जिसका विकास रहास्या नविनिकरण होता रहा है और परिवर्तनशील दशन के अनुरूप ,अनुकूलित रहा है। जिस्मे इस दौरान विशाल परिवर्तन हुआ है। हम समाज को इसकी परिवर्तनशील स्वभाव को समजे बिना पूर्ण रूप से नही समज सकत, समजना होगा की परिवर्तन किस प्रकार होता है तथा परिवर्तन की दिशा को देखना

होगा। सामाजिक व सांस्कृतिक परिवर्तन एक दुसरे को अंतर्भूत करते है संस्कृति कोई स्थिर वस्तू नही है , सदैव परिवर्तित की अवस्था मे रहती है। संस्कृति सामाजिक व्यवहार की दिशा-निर्देश प्रदान करते है । मनुष्य सामाजिक तणाव है जिसके लिए अतीत कोई मार्गदर्शन प्रस्तुत नही करता नवीन विचारधारा समूहजीवन के अंगो से महत्त्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न कर देती है। इसके विपरीत, संस्कृति आन्तरिक अनुभूति से सम्बद्ध है जिसमें मन और हृदय की पवित्रता निहित है। इसमें कला, विज्ञान, संगीत और नृत्य और मानव जीवन की उच्चतर उपलब्धियाँ सम्मिहित हैं जिन्हें 'सांस्कृतिक गतिविधियाँ' कहा जाता है। एक व्यक्ति जो निर्धन है, सस्ते वस्त्र पहने है, वह असभ्य तो कहा जा सकता है परन्तु वह सबसे अधिक सुसंस्कृत व्यक्ति भी कहा जा सकता है। एक व्यक्ति जिसके पास बहुत धन है वह सभ्य तो हो सकता है पर आवश्यक नहीं कि वह सुसंस्कृत भी हो। संस्कृति मानव के अन्तर्मन का उच्चतम स्तर है। मानव केवल शरीरमात्र नहीं हैं। वे तीन स्तरों पर जीते हैं और व्यवहार करते हैं - भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक। जबकि सामाजिक और राजनैतिक रूप से जीवन जीने के उत्तरोत्तर उत्तम तरीकों को तथा चारों ओर की प्रकृति का बेहतर उपयोग 'सभ्यता' कहा जा सकता है परन्तु सुसंस्कृत होने के लिए यह पर्याप्त नहीं है। जब एक व्यक्ति की बुद्धि और अन्तरात्मा के गहन स्तरों की अभिव्यक्ति होती है तब हम उसे 'संस्कृत' कह सकते हैं। संचार माध्यम का प्रभाव समाज में अनादिकाल से ही रहा है। परंपरागत एवं आधुनिक संचार माध्यम समाज की विकास प्रक्रिया से ही जुड़े हुए हैं। संचार माध्यम का श्रोता अथवा लक्ष्य समूह बिखरा होता है। इसके संदेश भी अस्थिर स्वभाव वाले होते हैं। फिर संचार माध्यम ही संचार प्रक्रिया को अंजाम तक पहुँचाते हैं। संचार माध्यम ही संप्रेषक और श्रोता को परस्पर जोड़ते हैं। हेराल्ड लॉसवेल के अनुसार, संचार माध्यम के मुख्य कार्य सूचना संग्रह एवं प्रसार, सूचना विश्लेषण, सामाजिक मूल्य एवं ज्ञान का संप्रेषण तथा लोगों का मनोरंजन करना है। संचार माध्यम से आशय है । संदेश के प्रवाह में प्रयुक्त किए जाने वाले माध्यम। संचार माध्यमों के विकास के पीछे मुख्य कारण मानव की जिज्ञासु प्रवृत्ति का होना है। वर्तमान समय में संचार माध्यम और समाज में गहरा संबन्ध एवं निकटता है। इसके द्वारा जन सामान्य की रूचि एवं हितों को स्पष्ट किया जाता है। संचार माध्यमों

ने ही सूचना को सर्वसुलभ कराया है। तकनीकी विकास से संचार माध्यमों विकसित हुए हैं, तथा इससे संचार अब ग्लोबल फेनोमेनो बन गया है।

संचार शब्द अंग्रेजी के कम्युनिकेशन का हिन्दी रूपांतर है, जो लैटिन शब्द कम्युनिस से बना है, जिसका अर्थ है सामान्य भागीदारी युक्त सूचना। चूंकि संचार समाज में ही घटित होता है, अतः हम समाज के परिप्रेक्ष्य से देखें तो पाते हैं कि सामाजिक संबन्धों को दिशा देने अथवा निरंतर प्रवाहमान बनाए रखने की प्रक्रिया ही संचार है। संचार समाज के आरंभ से लेकर अब तक के विकास से जुड़ा हुआ है। संचार अभिन्न सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। संचार माध्यम को समाज का सत्य व व्यक्ति स्वीकृत करता है। कहीं संचार माध्यम से कई परिवर्तन प्राप्त हुए हैं। संचार की प्रक्रिया को किसी आकार में बांधा नहीं जा सकता। फिर संचार का लक्ष्य ही होता है- सूचनात्मक, प्रेरणात्मक, शिक्षात्मक व मनोरंजनात्मक। मनोरंजन के लिये है संचार माध्यम का एक प्रमुख दायित्व माना जाता है। मुक्त बाजार व्यवस्था और जनसंचार के क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दाखल होने के कारण सारा परिदृश्य ही बदल गया है। अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विभिन्न व्यापारी चैनलोंके बीच आकाशवाणी दूरदर्शन जैसे लोक प्रसारमाध्यम का भी आपनी पकड बनाये रखने के लिए अपने प्राथमिकताओ के क्रम पर पुनर्विचार करने पर रहा है। व्यापारी स्वास्थ मनोरंजन की अनदेखी करते हुए जीस तरह के उत्तेजित संगीत नारी देहके व मर्यादित प्रदर्शन बहुल धारावाईकाओका उद्देश कार्यक्रम काल शीला बनाया है। उस पर यादी समयपर सोचा गया तो इस चैनल की चपेट में आये मध्यमवर्गीय परिवार के संस्कृति के क्षेत्र में होनेवाले प्रदूषण को शायद कोई नही बचाएगा। भारतीय हिंदी फिल्म के अनुभव से इस बात को बेहतर से शिका और समजा जा सकता है कि हमारी संस्कृति विरासत और पारंपारिक माध्यम इस नये कला माध्यम को लोगों के बींच लोकप्रिय बनाने के कितने मददगार साबित हुए है। फिल्म मिडीयाने फिल्म की विषय वस्तू के चैन अभिनय कला फिल्म निर्माण की प्रक्रिया और उसके समग्र विणण्यास का प्रयोग करते हुए उसकी संगीतरचना और प्रभाव इस पारंपारिक विरासत का भरपूर प्रयोग किया है। भारतीय फिल्म के सर्वाधिक लोकप्रिय गीत, पारंपारिक कर्णप्रिय लोक धनु के शास्त्रीय संगीत पर पाश्चात्य संगीत का आक्रमण व्यापक परीणाम भारतीय

जनमानस पर दिखाई देता। ये बात हम सभी जानते है की आधुनिक समाज के निर्माण में संचार माध्यमं की निर्णायक भूमिका रही है। आज यही संचार माध्यमं हमारी दिनचर्या को संचालित करते है। सामाजिक रूपांतर में अहम भूमिका है। यह कहा जाने लगा है कि सूचना ही शक्ती है अर्थात जो व्यक्ती संस्था या समाज सर्वाधिक जानकारिया रखते है खुशी के साथ में सारी शक्ती केंद्रित रही है। संवाद माध्यमोंका एक सकारात्मक भूमिका के बावजूद सत्य है कि, यदि संचार माध्यम सही हातोंमें नही है और वे आम जनता का व्यापक हित नही होते है। तो जनसंवाद माध्यम विनाशकारी क्षमता कभी कम नही होती सांप्रदायिकता के सवाल को लेकर जनसंवाद माध्यम दोनों ही भूमिका आदान-प्रदान करते है। आयोध्या विवाह के दोरान कुछ समाचार पत्र ने जीस तरह का उत्तेजन पैदा करनेवाले भूमिका निभाई उसके दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम हमे सहने पडे। उसके बावजूद गुजरात का गोधरा हत्याकांड महाराष्ट्र का कोरेगाव की घटना हम देख चुके है। इस घटना की रिपोर्टिंग बहुती दूरभाग्यशाली रूप से प्रस्तुत की गयी, जिसकी वजहसे दो जनजातियों मे बहुत बडा संघर्ष खडा हो गया उसके पीछे की सांप्रदायिक सोच दुसरी तरफ व्यवसायिक सोच रखने वाले अखबार और टीव्ही चॅनेल्स अवसर पर अपने को सबसे अधिक तेजावर, बढिया साबित करने के लिए हर मामले को गलत रूप से साबीत करनेका प्रयास करते है।

एक विश्वसनीय लोक प्रसारण माध्यमे के रूप में आकाशवाणी ने अपने गौरवशाली सत्तर वर्ष और दूरदर्शनने पैंतालीस वर्ष की अवस्था पार करके व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा वाले शेकडो चैनल के बीच आपना अलग पहचान बनाली है। आज जीवन का कोई क्षेत्र कोण माध्यमं की प्रभाव से अच्युत नही है। उपग्रह प्रणाली के विकासावर दूरसंचार के क्षेत्र में क्रांती के कारण आज सारी दुनिया की हलचल कोसमकर एक करिश्मा दिखाई दिया है । सूचना, शिक्षण, संरक्षण और मनोरंजन का ऐसा विश्व व्यापीन विज्ञान और तकनीक के बहुआयामी विकास का ही परिणाम है।

अनुसंधान का सार :-

1) संस्कृति संचयी होती है :- संस्कृति में शामिल विभिन्न ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित किया जा सकता है। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है,

ज्यादा से ज्यादा ज्ञान उस विशिष्ट संस्कृति में जुड़ता चला जाता है। यह चक्र बदलते समय के साथ एक विशिष्ट संस्कृति के रूप में बना रहता है।

2) **संस्कृति सीखी जाती है:-** संस्कृति शारीरिक और सामाजिक वातावरण से प्रभावित होती है। अर्थात् मानव के द्वारा संस्कृति को प्राप्त किया जाता है इस अर्थ में कि कुछ निश्चित व्यवहार हैं जो जन्म से या अनुवांशिकता से प्राप्त होते हैं, व्यक्ति कुछ गुण अपने माता-पिता से प्राप्त करता है लेकिन सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहारों वे पारिवारिक सदस्यों से सीखते हैं।

3) **संस्कृति परिवर्तनशील होती है:-** ज्ञान, विचार और परम्परायें नयी संस्कृति के साथ अद्यतन होकर जुड़ते जाते हैं। समय के बीतने के साथ ही किसी विशिष्ट संस्कृति में सांस्कृतिक परिवर्तन संभव होते जाते हैं।

4) **संस्कृति गतिशील होती है-** कोई भी संस्कृति स्थिर दशा में या स्थायी नहीं होती है। जैसे समय बीतता है संस्कृति निरंतर बदलती है और उसमें नये विचार और नये कौशल जुड़ते चले जाते हैं और पुराने तरीकों में परिवर्तन होता जाता है। यह संस्कृति की विशेषता है।

5) **संस्कृति हमें अनेक व्यवहारों के तरीके प्रदान करती है-** यह बताती है कि कैसे एक कार्य को संपादित किया जाना चाहिये, कैसे एक व्यक्ति को समुचित व्यवहार करना चाहिए।

6) **विचारधारा में परिवर्तन** - संचारसे रूढिगत-विचारों में परिवर्तन प्राप्त हुआ है। अपने संवाद से विचारों में परिवर्तन प्राप्त हुआ है।

7) **विवाह संबंधित विचारों में बदलाव** - शिक्षा व अन्य संचार माध्यमों से विचारों में परिवर्तन हो रहा है। लोगों की मानसिकता में सुधार हुआ है।जीवनसाथी के चयन में भी मानदंड बदले हैं।

8) **व्यावसायिक परिवर्तन :-** भारत में सभी को व्यावसाय चुनने का स्वतंत्र अधिकार प्राप्त है। बीते समय में दलित व पिछड़ी जाति के लोगों को स्वच्छता के कार्य अनिवार्यतः करने पड़ते थे। समाज के द्वारा रची गयी यह व्यवस्था अपरिवर्तनीय थी। संचार के विकास से उन लोगों को व्यवसाय चयन करने का मौका मिला।

निम्न व दलित लोगों के व्यवसायों में भी अब परिवर्तन आया है। इन जाति-बिरादरियो की सामाजिक स्थितियों में बदलाव आया है।

9) **ग्रामीण समूहों के स्वरूप में परिवर्तन** - ग्रामीण समूहों की रुढिवादिता, मान्यताएँ, जातिभेद, अस्पृश्यता जैसी मानसिकता थी। संचार माध्यम के कारण उन्हे मंदिर में प्रवेश निषेध, कुँए-तालाब से जल उपयोग निषेध, अलग शमशाम, पाठशाला प्रवेशादी के अनूठे नियम प्रवर्तित हुए। प्रभावी बिरादरियो का बोलबाला था। आज संचार माध्यम के कारण परिवर्तित होने से आम आदमी स्वतंत्रता पुर्वक जी रहा है।

10) **ग्रामीण पारंपरिक विचारधाराओ में भी बदलाव :** - ग्रामीण समूहों के स्वरूप में आमूल परिवर्तन प्राप्त हुआ है। लोगों की रुढिवादी व पारंपरिक विचारधाराओ में भी बदलाव दिखाई दे रहा है। खान-पान संबंधित विचार व आदतों में बदलाव आया है। आज शिक्षा के प्रचार प्रसार से, संचार माध्यमों के प्रभाव से जन जागृति से समस्याओं के हल प्राप्त होने लगे हैं। दोनों पीढियों के बीच वैचारिक व भौतिक अंतर बढ़ने लगा है।

11) **स्त्रियों के दर्जे में परिवर्तन** - ग्रामीण प्रांतो में संचार अभावसे स्त्रियाँ कमजोर थी। अब स्त्रियाँ जागृत हुई हैं। औरतो के सामाजिक दर्जे में वृद्धि हुई है। आपने हक्क के लिय महिला सजग हूयी है ,जिसे सामाजिक परिवर्तन ही कह सकते है।

12) **नये कानून का प्रभाव** - औपचारिकता व अनौपचारिक माध्यमों के द्वारा सामाज़िक नियंत्रण संभव है। अनौपचारिक माध्यम की कमजोरी पर औपचारिक माध्यम की सक्रियता बढ़ाई जाती है। तात्पर्य है कि रिवाज, रूढी, मान्यताएँ व जनरीति से नियंत्रण प्राप्त नहीं होता है। तब कानून के द्वारा, नीतियों के द्वारा प्रयत्न किये जाते हैं।

## संदर्भ सूची

1) एम. एल. गुप्ता एंव डी. डी. शर्मा, (2005), समाजशास्त्र नेट सेट ,प्रतियोगिता साहित्य सीरीज, आगरा।

2) विद्याभूषण, डी.आर. सचदेव ( 2005), समाजशास्त्र के सिद्धांत , किसाबा महल प्रकाशन, इलाहाबाद।

3) ओमवेट गेल (2009), दलित और प्रजातान्त्रिक क्रान्ति, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।

4) शर्मा, रामशरण, (1992), 'शूद्रों का प्राचीन इतिहास राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

5) कृपाशंकर चौबे , संचार माध्यम और भारतीय संस्कृति।

6) आनंद भारद्वाज, भारतीय संस्कृती परिदृश्य और नये संवाद माध्यम, गद्य कोश ।

7) Cambridge English Dictionary (July 26, 2015) Meaning of culture.